भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

संदेश

vkb;] ge lo'gkjk vrjk"Vh;rkokn d ijpe dk cyn j[k! ^Hkkjr d tu;) d leFku e vrjk"Vh; lEeyu* d lQy lekiu ij yky lyke!!

प्यारे साथियों,

हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी), जनमुक्ति छापामार सेना (पी.एल.जी.ए), क्रांतिकारी जन कमेटियां (आर.पी.सी), क्रांतिकारी जन संगठनों और भारत की क्रांतिकारी जनता के तरफ से देश और विदेश के उन सभी पार्टियां, संगठनों और व्यक्तियों को हम तहे दिल से क्रांतिकारी अभिवादन तथा लाल सलाम पेश करते है जो भारत की नई जनवादी क्रांति के लिए विश्वव्यापी सर्मथन जुटाने में प्रयासरत है और जिनके प्रयासों के वजह से ही 24 नवम्बर 2012 को जर्मनी के हेमबर्ग शहर में 'भारत के जनयुद्ध के समर्थन में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन' का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

सच्चे अंतर्राष्ट्रीयतावादी उत्साह के साथ हेमबर्ग सम्मेलन में जारी किये गये आपके संदेशों और वक्तब्यों से विश्व समाजवादी क्रांति के इस मोर्चे में यानि भारत में वर्ग दुश्मनों के खिलाफ तीखी लड़ाई लड़ रहे शोषित जनता, कार्यकर्ताओं और योद्धाओं ने बेहद जरूरी मनोबल हासिल किये है। जैसे की आप सभी को मालुम है, हम यहां दुश्मन के दिन–ब–दिन बढ़ते हुई गंभीर दमनकारी हमलों का मुकाबला कर रहे है और इस मुश्किल परिस्थिति में हमें आपके संदेश समय पर नहीं मिल पाये। जो भी संदेश हम तक पहुंचे, वह भी काफी समय गुजरने के बाद, आपके अथक प्रयासों के प्रतिक्रिया के रूप में इस संदेश को भेजने में हुई देरी के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

यह जानकर हमें बेहद खुशी हुई कि हेमबर्ग में विशेषकर नौजवानों, छात्रों, महिलाओं और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। दुनिया के विभिन्न कोनों में आयोजित किये गये अभियानों की ब्योरों ने हमे जोश और अल्लास से भर दिया। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है, इन तमाम समर्थन और एकजुटता ने हमे विश्व सर्वहारा वर्ग तथा विश्व सर्वहारा क्रांति में हमारी भूमिका के प्रति और भी ज्यादा जिम्मेदारी का एहसास दिला रही है। दुश्मन के अभुतपूर्व हमले के वजह से इस सम्मेलन में शामिल होकर एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करना हमारे लिये मुमकिन नहीं हो सका।

हमारे नेतृत्वकारी साथियों के शहादत के समय दुखभरी घड़ियों में आपने हमारा साथ दिया, चाहे वह 1999 में कामरेड्स श्याम, महेश, मुरली की शहादत हो या फिर पिछले कुछ सालों में क्रांति के महान नेता कामरेड्स आजाद और किशनजी की शहादत हो, हमारी जिन्हे साम्राज्यावादियों कि परोक्ष सहायता से भारत के शाषक वर्गों ने बेरहमी से हत्या किया। सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद की भावना से परिपूर्ण आपके वक्तव्य – 'भारत की माओवादियों का संघर्ष हमारा संघर्ष, उनकी क्षति हमारी क्षति' ने हमारे दिलों को तसल्ली से भर दिया जो हमें हमारे दुखों से उबरकर संघर्ष के राह पर साहस के साथ अग्रसर होने में मदद करेगी।

आपने यह सही कहा है की भारत के और विश्व क्रांति के सभी शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित करने का एक तरीका है भारत में चल रहे जनयुद्ध के लिये ज्यादा से ज्यादा मदद और समर्थन जुटाना। यह साम्राज्यवाद के खिलाफ विश्वव्यापी संघर्ष को तेज करने और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद को मजबूत करने के प्रयासों का ही हिस्सा है। हेमबर्ग सम्मेलन में यह सिद्ध किया कि आपके द्वारा निर्धारित इन कार्यभारों को पूरा करने की प्रक्रिया में यह एक और महत्वपूर्ण कदम था।

आप सभी ने भारतीय राष्ट्र द्वारा छेड़े गये जनता पर युद्ध की लगातार निंदा और विरोध करते आये है और इसे तुरंत बंद करने की मांग भी कर रहे हैं। विभिन्न देशों के सर्वहारा, मेहनतकश जनता, पार्टियों, संगठनों और व्यक्तिओं के इस अंतर्राष्ट्रीय समर्थन को क्रांतिकारी संघर्ष के इलाकों के जनता तहे दिल से याद करते है क्योंकि इसी तरह की समर्थन का कोई भी जन आंदोलन को जरूरत होती है।

आपने भारत की जनयुद्ध के समर्थन में विश्वव्यापी एकजुटता अभियान चालू किये। आप जिन देशों में कार्यरत है – विशेषकर साम्राज्यवाद के गढ़ों में – इस अभियान की महत्व को विश्व क्रांति के केन्द्रों में से एक भारत की संघर्षरत जनता और हमारी पार्टी बखूबी सराहना करती है।

इस तरह के समर्थन और सहयोग को हम बहुत ही महत्व देते है और दृढ़ता के साथ यह एलान करते है कि हम भी विश्व के कोने–कोने के संघर्षशील पार्टियों, संगठनों और जनता को हमारी यथासम्भव सहयोग देगें। संघर्षरत जनता का हौसला और आत्मविश्वास ऐसे समर्थनों से और बुलन्द होता है और उन्हें यह आश्वासन मिलता है कि लड़ाई में वह अकेले नहीं है। यह एकजुटता फिर से यह सच्चाई उजागर करती है की हम सभी एक ही साझा दुश्मन यानी साम्राज्यवाद, उसके दलाल/कठपुतलियों तथा दुनियाभर के प्रतिक्रांतिकारियों का सामना कर रहे हैं। एकजुटता की भावना जनता और जनसेना के जुझारू ताकत को बड़ाता है और संघर्ष को दृढ़संकल्प के साथ आगे बढ़ाने में मददगार होता है। हमारी पार्टी, जनमुक्ति छापामार सेना, क्रांतिकारी जन कमेटियां, क्रांतिकारी जन संगठनों और क्रांतिकारी जनता, हमारे देश के सभी प्रगतिशील और जनवादी ताकतें भारत तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ठीक इसी तरह की एकजुटता और सहयोग की अपेक्षा रखता है। जनयुद्ध को जारी रखना और इसका विकास करना हमारे सामने एक बहुत ही जरूरी कार्यभार है।

भारत के जनयुद्ध को समर्थन का हाथ बढ़ानेवाली हर पार्टी और संगठन अपने–अपने देश के क्रांति को आगे बढ़ाने और अन्य क्रांतियों के प्रति सहयोग को अपनी क्रांतिकारी कार्यभार का अहम हिस्सा मानते हैं। यह अवधारणा कि हमारी अपनी अपनी देशों को क्रांतिकारी आंदोलन को विकसित करना ही दूसरे देशों के क्रांतियों के साथ हमारी एकजुटता व्यक्त करने का सबसे अच्छा तरीका है, इस बात को सम्मेलन ने दृढ़ता से व्यक्त किया है और हम इससे पूरी तरह सहमत हैं। हम भारत के माओवादी इसी उत्साह के साथ कार्यरत हैं और सच्चे क्रांतिकारियों के नेतृत्व में शुरू हुई नक्सलबाड़ी संघर्ष के समय से लेकर अब तक हमारी क्रांतिकारी व्यवहार का यही खासीयत रही है।

नक्सलबाड़ी के विरासत को बरकरार रखनेवाली हमारी पार्टी का हमेशा से यह विचार रहा है कि भारत की नई जनवादी क्रांति विश्व सर्वहारा क्रांति का एक अभिन्न अंग है, हमारीं पार्टी विश्व सर्वहारा वर्ग का एक अगुवा दस्ता है, भारत की जनमुक्ति छापामार सेना विश्व सर्वहारा सेना की एक टुकड़ी है और यहा निर्माणाधीन क्रांतिकारी जन कमेटियां विश्व सर्वहारा अधिनायकत्ववाद तथा विश्व समाजवादी राज्य का ही हिस्सा है। भारत की क्रांति में दिये गये जनता और साथियों की अमुल्य शहादत भी विश्व समाजवादी क्रांति के अंतर्गत दुनिया के हर देश में असंख्य प्यारे शहीदों द्वारा किये गये महान त्यागों का ही हिस्सा है। इसी समझदारी के साथ भारत के विभिन्न क्रांतिकारी धाराओं ने नक्सलबाड़ी के समय से ही दूसरे देशों में चल रहे क्रांतिकारी और जनवादी आंदोलनों के समर्थन में एकजुटता अभियान चलाये। इन अभियानों में प्रमुख है वियतनाम, लाउस और कम्यूचिया के क्रांतिकारी संघर्षों के प्रति एकजुटता, फ़िलस्तीन, तमिल इलम आदि उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के मुक्ति संघर्षों के समर्थन में अभियान तथा इराक और अफगनिस्तान के जनता का साम्राज्यवाद–विरोधी संघर्ष के साथ एकजुटता, आदि। इसी कड़ी में हमारे पार्टी ने 22 से 28 अप्रैल 2013 के दौरान फिलीप्पिन्स की नई जनवादी क्रांति के समर्थन में एकजुटता सप्ताह मनाया।

हमारी पार्टी का यह मानना है कि क्रांतिकारी संघर्षों के आगे बढ़ने से ही इस तरह के एकजुटता अभियान मजबूत हो सकते है और अपने आपको लम्बे समय तक सक्रिय रख सकते है। दूसरी तरफ, क्रांतिकारी संघर्ष भी इस तरह के एकजुटता अभियानों से जरूरी आत्मगत और वस्तुगत शक्ति हासिल कर सकता हैं। वर्तमान की विश्व परिस्थिति में सभी क्रांतिकारियों को इस अंतरसंबन्ध के बारे में गहरी समझ होनी चाहिए। हमें यह महसूस हुआ कि इसी समझदारी की वजह से हेमबर्ग सम्मेलन इस दिशा में एक सही कदम लेने में सफल रहा है।

ग्रीन हंट अभियान के नाम से छेड़े गये देशव्यापी चौतरफा आक्रमण, यानी जनता पर युद्ध के तहत केन्द्र और राज्य सरकारों के किराये के प्रतिक्रियावादी सशस्त्र बलों द्वारा किये जा रहे अनगिणत क्रुर अत्याचारों ने देश और दुनिया के एक बड़े हिस्से के जनता को आक्रोशित किया, चाहे वे राजनीतिक दृष्टिकोण और आदर्श में भिन्न मत रखते हों। यह आक्रोश जल्द ही बड़े विरोध प्रदर्शनों और अभियानों में तबदील हो गया जिनकी प्रमुख मांग थी फौरी तौर पर ग्रीन हंट अभियान की रोकथाम। भारत की संघर्षरत जनता के समर्थन में और इस हमले को बंद करने के लिये भारत सरकार पर दबाव बनाने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय प्रचार अभियानों के निर्माण में क्रांतिकारी, जनवादी और प्रगतिशील ताकतों ने देशीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगातार प्रयास किये। इसी क्रम में दुनिया के क्रांतिकारी कम्युनिस्ट शक्तियों ने भी भारत की जनयुद्ध के समर्थन में एक अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता आंदोलन तैयार करने की सही पहलकदमी दिखायी। ग्रीन हंट विरोधी मुहिम और भारत की जनयुद्ध की समर्थन में एकजुटता आंदोलन दोनों एक दुसरे के परिपुरक है। ग्रीन हंट विरोधी कार्यक्रम इस एकजुटता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए क्योंकि इस देशव्यापी चौतरफा आक्रमण को हराना हमारे सामने एक फौरी कार्यभार है। हमारी पार्टी का मानना है कि भारत की जनयुद्ध के पक्ष में खड़े सभी कम्युनिस्ट ताकतों के सामने यह समय की मांग है कि वह ग्रीन हंट विरोधी मुहिम को मजबूत करने और एक व्यापक विश्वव्यापी साम्राज्यवाद–विरोधी मोर्चा के निर्माण के लक्ष्य से –

जिसके प्रयास अभी जारी है – बड़े पैमाने पर साम्राज्यवाद–विरोधी जनवादी और क्रांतिकारी शक्तियों को गोलबंद करने की यथासम्भव कोशिश करे। दुनिया के कम्युनिस्ट ताकतों की एकता को और मजबूत करने से भारतीय क्रांति को भी और ज्यादा मजबूत समर्थन मिल पायेगा।

आज एक तरफ जब साम्राज्यवाद उसकी अब तक के सबसे गहरी संकट से गुजर रहा है, वही दुसरी तरफ मजदूर वर्ग, अन्य शोषित वर्गों व ताकतों और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के मुक्ति संघर्ष तथा अर्ध–सामंती अर्ध–औपनिवेशिक देशों में जनयुद्ध भी तेज हो रहे हैं। विश्व समाजवादी क्रांति की दो धाराएं – अर्ध–सामंती अर्ध–औपनिवेशिक तथा नव–औपनिवेशिक देशों में नई जनवादी क्रांति और पूंजीवादी–साम्राज्यवादी देशों में समाजवादी क्रांति अलग–अलग स्तर पर आगे बढ़ रहें हैं। ज्यादा से ज्यादा लोग मार्क्सवाद–लेनिनवाद और माओवाद को अपने मार्गदर्शक आदर्श के रूप में अपना रहे हैं। लोग यह महसूस कर रहें है कि साम्राज्यावादियों, पिछड़े देशों में उनके कठपुतली शासकों और हर किस्म के प्रतिक्रियावादी शक्तियों का गठजोड़ दुनिया के सभी उत्पीड़ित जनता और राष्ट्रीयताओं के साझा दुश्मन है और इसलिये वे इनके विरूद्ध बड़ती संख्या में लड़ाकुओं के कतारों में शामिल हो रहे है। विश्व के सभी बुनियादी अंतरविरोध तथा प्रत्येक देश के आन्तरिक अंतरविरोध दिन–ब–दिन बड़ रहे हैं और तीखा होता जा रहा हैं। विश्व परिस्थिति क्रांति के लिये अनुकूल है। इसलिये विश्व के सभी कम्युनिस्टों के सामने सबसे प्रमुख कार्यभार है इस बेहतरीन वस्तुगत परिस्थिति का उपयोग करते हुए शोषित जनता को गोलबंद करना तथा आत्मगत शक्तियों को मजबूत करना, क्योंकि एक मजबूत सर्वहारा पार्टी और एकीकृत जनता ही क्रांति को सफल बना सकती है।

वर्तमान की आर्थिक संकट जिसमें विश्व पूंजीवाद लगातार जकड़ता जा रहा है, इस मौजूदा व्यवस्था के आन्तरिक अंतरविरोधों को तेज कर रहा है और विशाल जन आंदोलनों, विद्रोहों और क्रांतियों को जन्म दे रहा है।

हमारे महान मार्क्सवादी शिक्षक लेनिन के विश्लेषण के अनुरूप साम्राज्यवाद उसकी मृत्युशर्या पर है और यह संकट इसी तथ्य को फिर से उजागर कर रही है। इस असमान पूंजीवादी विश्व में आर्थिक संकट भी अलग–अलग देशों में असमान रूप से प्रतिबिम्बित होगा। इसलिये हम कम्युनिस्टों का कर्तव्य है, की हम मार्क्सवाद–लेनिनवाद और माओवाद की विश्वजनीन विचार को हमारे अपने–अपने देशों की ठोस परिस्थिति के मुताबिक व्यवहार में प्रयोग करें। हमारी सभी तैयारियां तथा व्यवहार भी क्रांति को सफल बनाने की उद्‌देश्य को ध्यान में रख कर ही होनी चाहिए। जैसे की आप लोगों ने सही उल्लेख किया है, पूंजीवादी देशों में मजदूरों, छात्रों, नौजवानों, महिलाओं आदि के आंदोलनों को विकसित करना होगा। साथ ही, दूसरे देशों के जनयुद्धों को समर्थन देना भी हर एक सर्वहारा पार्टी की एक अभिन्न और प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय कार्यभार होगी।

इस सम्मेलन का आयोजन करने के लिये पहलकदमी लेनेवाले और इसे सफल बनानेवाले सभी भाईचारा पार्टियों और संगठनों ने हम पर जो भरोसा दिखाया इसके जवाब में हम फिर से यह शपथ लेते है कि कई नेतृत्वकारी साथियों के शहादत और कुछ संघर्ष इलाकों की क्षति के बावजूद विश्व समाजवादी क्रांति के शहीदों के सपनों को साकार करने के लिए हम भारत की क्रांति को जारी रखेंगे, इसे मजबूत करेगें और आगे बढ़ायेगें।

यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन साम्राज्यवाद और भारतीय शासक वर्गों के खिलाफ एक बड़ा चोट है। साथ ही, सर्वहारा और उत्पीड़ित मेहनतकश जनता के विशाल शिविर को इसने भारत की नइ जनवादी क्रांति तथा विश्व साम्राज्यवादी क्रांति के प्रति आशा की नई किरणों से भर दिया हैं। इस प्ररिपेक्ष में आप सभी के सामने हम एक बार फिर यह शपथ लेते है कि विश्व समाजवादी क्रांति के महान शहीदों के ऊंचे लक्ष्यों को पूरा करने के लिए हम अपनी संघर्ष जारी रखेगें। हम यह ऐलान करते हैं कि एक कठिन और टेढ़े–मेढे दीर्घकालीन राह से अग्रसर हमारी पार्टी और भारत की क्रांतिकारी जनता की जुझारू उमंग को किसी भी तरह की फासीवादी दमन नहीं कुचल सकती है। अन्तिम जीत हासिल होने तक बलिदानों के जरिये हम नई दृढ़ता के साथ आगे कदम बढ़ाते जायेगें। विश्व सर्वहारा वर्ग और भारतीय क्रांति के सभी दोस्तों तथा शुभचिंतकों को हमारा यह वादा है।

lo'gkjk vrjk"Vh;rkokn ftnkckn!

vrjk"Vh; lo'gkjk] Økfrdkjh vkj tuoknh rkdrk rFkk nfu;k d mRihfMr jk"Vh;vk vkj turk dh ,dtVrk ftnkckn!

Økfrdkjh vfHkoknu d lkFk

x.kifr

lfpo

Hkkjr dh dE;fuLV ikVh ¼ekvkoknh½